International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 4; April 2017; Page No. 318-321

पत्रकारिता और मानवाधिकार

डॉ0 कमलेश कुमार सिंह

एसोशिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान के0ए0 (पी0जी0) कालेज, कासगंज, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

मानव एक विवेकशील प्राणी है जो भाषण, लेखक आदि के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने की स्वतन्त्रता रखता है। मिल्टन ने कहा है कि ''मुझे अपने अन्तर्मन को जानने की, बोलने की तथा तर्क करने की स्वतन्त्रता अन्य स्वतन्त्रताओं से अधिक प्रिय है।'' भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19(1) क में व्यक्ति के वाक व अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का उल्लेख किया गया है। संविधान में उल्लिखित वाक एवं अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता में प्रेस (पत्रकारिता) की स्वतन्त्रता का उल्लेख नहीं किया गया है। लेकिन वाक व अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता में प्रेस (पत्रकारिता) की स्वतन्त्रता को अन्तनिहित माना गया है। प्रेस (पत्रकारिता) की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में उच्चतम न्यायालय ने इण्डिया एक्सप्रेस न्यूज पेपर बनाम यूनियन ऑफ इण्डिया के मामलों में प्रेस (पत्रकारिता) को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ मानते हुए इसे सभी स्वतन्त्रताओं की जननी माा है तथा अनुच्छेद 19(1) में प्रदत्त वाक एवं अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता में ही प्रेस की स्वतन्त्रता भी निहित माना है।

पत्रकारिता की स्वतन्त्रता से जुड़े रोमेश थापर बनाम स्टेट ऑफ मद्रास एवं सकल पेपर्स बनाम यूनियन ऑफ इण्डिया के मामलों में उच्चतम न्यायालय ने कहा कि ''वाक और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता में विचारों का प्रचार, प्रसार व संचार सम्मिलित है जिसका माध्यम पत्रकारिता (समाचार पत्र) है।'' वीरेन्द्र बनाम स्टेट ऑफ पंजाब के मामले में उच्चतम न्यायालय ने कहा कि '' किसी समाचार पत्र को समाज की ज्वलंत समस्याओं पर अपने विचार व्यक्त करने से रोकना वाक व अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का अतिक्रमण है। विचारों की अभिव्यक्ति एवं उनका आदान–प्रदान समाज के हित में हैं।''

मेनका गांधी बनाम यूनियन ऑफ इण्डिया के मामले में उच्चतम न्यायालय ने कहा कि ''लोकतंत्र मुक्त व खुली चर्चाओं पर निर्भर है। सरकार की कमियों एव कमजोरियों को उजागर करना अपेक्षित है। यदि हम यह कहते है कि लोकतंत्र का अर्थ जनता की सरकार और जनता के लिए सरकार है तो जनता को मुक्त व खुली चर्चा का अवसर अवष्य मिलना चाहिए। 21वीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही देश में तथा अर्न्तराष्ट्रीय क्षेत्रों में पत्रकारिता के माध्यमों में तेजी से विस्तार हुआ है। आज पत्रकारिता के अन्तर्गत जनसंचार के माध्यम के रूप में समाचार पत्र, रेडियो, दृश्य–श्रव्य संचार के माध्यम, टी0वी0 समाचार, साप्ताहिक, पाक्षिक व मासिक पत्रिकायें और पुस्तकें, विडियो फिल्म, फिल्म आदि सम्मिलित हो चुकी है।

पत्रकारिता एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो हमारे जीवन की विविधताओं, नित्य नूतनताओं और दैनिक घटनावलियों, प्रसांवलियों को शीघ्र प्रस्तुत करने की अतुल क्षमता रखता है। बीसवीं शताब्दी का जीवन वैचित्र्य–विरोधमूलक है, उसे सही रूप में प्रस्तुत पुनर्प्रस्तुत और समासित करने के लिए पत्रकारिता एक अमोघ अस्त्र भी है और जीवन्त भी। वस्तुतः वही वह माध्यम है जिसके अन्तर्गत हम विश्व जीवन से जुड़े होते हैं। आज के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यस्तता–पूर्ण जीवन में समाचार–पत्र हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चला है। जिस तरह शारीरिक भूख शांत करने के लिए भोजन जरूरी है, उसी तरह मानसिक तृप्ति के लिए पत्र–पत्रिकाएँ जीवन के लिए अनिवार्य हो चुकी है। पत्रकारिता आधुनिकता की एक विशिष्ट उपलब्धि है। पत्रकारिता का सामान्य अर्थ है 'पत्रकार का काम या व्यवसाय'। दूसरे रूप में हम कह सकते हैं कि पत्रकारिता स्पष्ट रूप से तीन रूपों में सामने आती है

1. पत्रकार होने की अवस्था या भाव
2. पत्रकार का काम, तथा
3. वह विद्या जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों, उद्देश्यों आदि का विवेचन होता है।

डॉ0 बद्रीनाथ कपून ने वैज्ञानिक परिभाषा कोश में कहा है कि, ''पत्रकारिता पत्र–पत्रिकाओं के लिए समाचार, लेख आदि एकत्रित तथा सम्पादित करने, प्रकाशन–आदेश आदि देने का कार्य है।'' ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार, पत्रकार के व्यवसाय का प्रमुख साधन हैः पत्रकारिता, लेखन और जन सामान्य की स्थितियों का लेखन और संग्रह व 'जनरल्स' की सुरक्षा और संग्रहवृत्ति। ''आकर्षक शीर्षक देना, पृष्ठों का आकर्षक स्वरूप, जल्दी से जन्दी समाचार देने ही होड़, देश विदेश के प्रमुख उद्योग–धन्धों के विज्ञापन प्राप्त करने की चतुराई, सुन्दर छपाई और पाठक के हाथ में सबसे जल्दी पहुँचा देने की तत्परता, ये सब पत्रकार कला के अन्तर्गत सम्मिलित हैं।''

''पत्रकारिता वह धर्म है जिसका सम्बन्ध पत्रकार के उसके कर्म से है जिसमें वह तात्कालिक घटनाओं और समस्याओं का सबसे अधिक सही और निष्पक्ष विवरण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करे और समस्त जनमत जागृत करने का प्रयत्न करें।''

डॉ0 अर्जुन तिवारी का कहना है, ''समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं जिसमें गुणों को परखना तथा मंगलकारी तत्वों को प्रकाश में लाना सम्मिलित है।'' महात्मा गांधी तो इसमें 'समदृष्टि' को महत्व देते थे। समाज हित में सम्यक् प्रकाशन को पत्रकारिता कहा जा सकता है। असत्य, अशिव और असुन्दर पर सत्यम्, शिवम् सुन्दरम्' की शंख ध्वनि पत्रकारिता है।

''पत्रकारिता एक समसामयिक इतिहास है, जो शीघ्रतापूर्वक लिखा जाता है।'' अपने समय का लिखा गया इतिहास ही पत्रकारिता का महत्म संदर्भ है। दैनिक क्रम में घटने वाली घटनाओं को चाहे वह घटना राजनीतिक हो, सांस्कृतिक और चाहे आर्थिक हो, रहस्योंद्घाटन की पत्रकारिता का जीवन है। पत्रकारिता का मूल ध्येय अन्याय का रहस्योद्घाटन करना, रोष–परिहार करना, सलाह देना, असहायों की सहायता करना और मित्रविहीन को मित्रवत मार्ग दिखाना है।

'मॉडर्न जर्नलिज्म' मे कर्ल जी मुगलर ने पत्रकारिता को इस प्रकार परिभाषित किया है कि ''पत्रकारिता तात्कालिक घटनाओं के सूक्ष्म विश्लेषण पर आधारित ज्ञान का कार्य है, ऐसा कार्य जिसमें आवश्यक तथ्यों को प्राप्त करना, उनकी महत्ता के अनुसार ही उसे तैयार करना अर्थात् स्थितियों के अनुसार तात्कालिक घटनाओं की बुद्धिमता से जनजीवन के सम्मुख प्रस्तुत करना पड़ता है।''

'जर्नलिज्म' फ्रेंच शब्द 'जर्नी' से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ होता है– एक–एक दिवस का कार्य या उसकी विवरणिका प्रस्तुत करना। पत्रकारिता दैनिक जीवन की घटनाओं और उनके आधार पर प्रकाशित पत्रों की संवाहिका होती है। इसमें घटनाओं, तथ्यों, व्यवस्थापरकता के साथ–साथ राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और कलात्मक संदर्भों की प्रस्तुति होती है। प्रेमनाथ चतुर्वेदी का भी यही मत है कि पत्रकारिता विशिष्ट देशकाल, परिथितिगत तथ्याों का अमूर्त, परोक्ष, मूल्यों के संदर्भ और आलोक उपस्थित करती है। वास्तव में पत्रकारिता, पत्रकार द्वारा चारों दिशाओं की सूचनाएँ एकत्रित करके उन्हें जनता के सामने प्रस्तुत करने का माध्यम है, साथ ही जनमा के विचारों के अनुसार ही जनभावना को मुखरित करना है, चाहे ये विचार किसी भी प्रकार के विचारों से सम्बन्धित क्यों न हों।

''पत्रकारिता वास्तव में एक चुनौती है जिसके आवश्यक गुण हैं– उत्तरदायित्व, अपनी स्वतंत्रता बनाए रखना, सभी दबावों से परे रहना, सत्य प्रकट करना, निष्पक्षता, समान और सभ्य व्यवहार।'' इस प्रकार पत्रकारिता सामान्य अर्थ में वैश्विक क्षितिज पर घटित होने वाली घटनाओं का तथ्यात्मक, विविधात्मक और यथार्थपरक प्रस्तुतिकरण है। पत्रकारिता व्यक्ति, समाज, सामाजिक संदर्भों और बहुविध परिवेश की कहानी है। जिस प्रकार कहानी किसी मानवीय संवेग, किसी क्षण विशेष की पकड़ और घटना प्रसंगों की कलात्मक कल्पनाप्रवण प्रस्तुति है। प्रकार पत्रकारिता कहानी की प्रस्तुति तो है, पर साहित्य की अपेक्षा कम कलात्मक है। यदि साहित्य में कल्पना प्रमुख है तो पत्रकारिता में यथार्थ की सत्य प्रतिबोधक स्थितियाँ प्रमुख होती हैं। पत्रकारिता में कल्पना का प्रयोग मात्र शैली तक ही सीमित होता है।

पत्रकारिता का स्वरूप

पत्रकारिता के स्वरूप को यहाँ पर विभिन्न शीर्षकों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया जा रहा है।

1. समाज की गतिविधियों का दर्पण – पत्रकारिता समाज की गतिविधियों का प्रत्यक्ष दर्पण है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अतः जिस समाज में मनुष्य रहता है उस समाज के बारे में वह अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहता है। समाज में कब, कहाँ, कैसे, क्या हो रहा हैं? इन सबको जानने का एक मात्र साधन पत्रकारिता है। ''पत्रकारिता वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क में उस दुनिया के बारे में समस्त सूचनाएँ संकलित करते हैं, जिसे हम स्वतः कभी नहीं जान सकते।''

इस प्रकार जब सामाजिक जीवन प्रगतिशील तत्वों को अपनाता हुआ निर्माण और उत्थान की ओर अग्रसर होता है तब जो स्वस्थ जीवन–मूलय संरचित होते हैं, उन्हें पत्रकारिता अधिव्यक्ति प्रदान करती है। इस प्रकार पत्रकारिता सामाजिक जीवन की सत् असत्, दृश्य–अदृश्य और शुभ–अशुभ छवियों का दर्पण है। समाज में विद्यमान कुरीतियों, अंधविश्वासों, रुढ़ियों आदि के प्रति भी पत्रकारिता संघर्ष छेड़ती हुई समाज में इन बुराईयों को दूर करने का प्रयास करती है। अन्य शब्दों में, एक सच्चा और कुशल पत्रकार अन्तराष्ट्रवाद और संकीर्ण देशभक्ति के विरुद्ध आवाज उठाने का प्रयास करता है। पत्रकारिता समाज में जो कुछ भी अच्छा या बुरा घटित होता है, उसका विश्लेषण करती हुई समाज की भविष्यदृष्टा बन जाती हैं संक्षेप में पत्रकारिता समाज की सीमाओं पर पड़ने वाली एक चैतन्य किरण है जो अपने प्रकाश से सामाजिक अस्त–व्यस्तता और विश्रंखलता को समाप्त करती हुई प्रकाश विकीर्ण करती है। यही प्रकाश सामाजिक जीवन में प्रवेश करता हुआ उसके अन्तस् में छिपे अंधकार की परतों को काट देता है।

2. सूक्ष्म शक्ति – पत्रकारिता वह सूक्ष्म शक्ति है जो परिवेश में शरीर और उसके अन्तः करण को निरूपित करती है। आज हमारा जीवन पर्याप्त जटिल और संकुल हो गया है। आए दिन कुछ न कुछ ऐसी करुणाजनक, भयावह और कँपा देने वाली घटनाएँ घटित होती रहती हैं जिससे मनुष्य आश्चर्यचकित हो जाता है। मानवीय सम्बन्ध आज जिस रू‍प में बदल रहे हैं उनका कारण कुछ भी हो, किन्तु इतना निश्चित है कि उन सम्बन्धों का सूक्ष्म निरूपण और प्रस्तुतिकरण अनेक बार हमें समाचार–पत्रों के माध्यम से ही मिलता है। समाज में सजग प्रहरी के रूप में एक पत्रकार समाज में घटित घटनाओं की गहराई में प्रवेश करता है और बदलते हुए परिवेश और मानव सम्बन्धों की जटिलता के कारणों, प्रतिक्रियाओं और परिणामों को विश्लेषित करता है। ऐसा करने से समाज में रहने वाले व्यक्तियों को समाज में चल रहे घटनाक्रम की जानकारी भी होती है और वह अपने जीवन में सतर्क बने रहने के लिए प्रेरणाप्रद शक्ति भी प्रदान करता है। ऐसी स्थिति में यह कहा जा सकता है कि पत्रकारिता परिवेश के शरीर अर्थात स्थूल घटनाचक्र के साथ–साथ मन अर्थात सूक्ष्म सम्बन्धों को भी उजागर करती है।

3. सामाजिक मूल्यों की नियामिका – पत्रकारिता विद्रोह, आक्रोश और आलोचना के माध्यमों को स्वीकार करती हुई स्वस्थ–सामाजिक मूल्यों की नियामिका है। देश व समाज में व्याप्त असन्तोष, चाहे वह देश, जाति, धर्म किसी भी रूप में क्यों न हो, पत्रकारिता उसका सही विश्लेषण कर प्रतिबिम्बित करती है। उदाहरणार्थ, आपात्काल के दौरान देश में परिवार नियोजन के प्रति लोगों में भी आक्रोश पैदा हुआ और उसकी जो भी प्रतिक्रिया हुई उसका विस्तृत ब्यौरा प्रकाशित करके मनुष्य को उसके प्रति अच्छी और बुरी बातें बताकर पत्रकारिता ने अपना मार्ग प्रशस्त किया।

पत्रकारिता राष्ट्र में घटने वाली समस्त महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में चिन्तन की प्रक्रिया को जन्म देकर उसे सही दिशा में अग्रसर होने में सहायता करती है। पत्रकारिता यदि सचमुच पत्रकारिता है तो मार्गदर्शिका, जीवन निर्मात्री और सामाजिक मूल्यों का विद्यायिका ही हो सकती है, जो सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रतिमानों को स्थापित करने का प्रयास करती है।

4. विविधात्मक और व्यापक क्षेत्र – पत्रकारिता का क्षेत्र न केवल विविधात्मक है अपितु व्यापक भी है। जीवन को कोई भी विषय, कोई भी पहलू ऐसा नहीं है जो पत्रकारिता से अछूता हो। आज प्रत्येक से सम्बन्धित पत्र–पत्रिकाएँ आपको उपलब्ध हो जाएँगी, परन्तु प्रत्येक समूह के व्यक्ति अपने से सम्बन्ध में नवीनतम जानकारी और ज्ञान के लिए पत्रकारिता को ही अपना माध्यम बनाते हैं। पत्रकारिता अब केवल रोचक समाचारों का संकलन या मात्र राजनीति तक ही सीमित नहीं है वरन साहित्य, फिल्म, खेलकूद, वाणिज्य, व्यवसाय, विभान, धर्म, हास्य, व्यंग्य तथा ग्रामीण क्षेत्र में भी प्रवेश कर चुकी है। कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं जिसमें इसका प्रवेश नहीं हुबा हो।

5. नीर–क्षीर विवके – पत्रकारिता पूर्णतः निषेधात्मक माध्यम नहीं है। एक स्वस्थ पत्रकारिता का लक्षण नीर–क्षीरवत विवेचन करना होता है। इतना ही नहीं, विवेचन के साथ–साथ निर्णय का काम भी पत्रकारिता करती है। जो पत्रकारिता गहराई तक अपनी पहुँच रखती है उसे मात्र निषेधात्मक मानना औचित्यपूर्ण है क्योंकि एक पत्रकार भविष्यदृष्टा होता है, वह समस्त राष्ट्र की जनता की चित्तवृत्तियों, अनुभूतियों और आत्मा का साक्षात्मकार करता है। पत्रकार किसी को ब्रह्मज्ञानी नहीं बना सकता, परन्तु मनुष्य की भांति उसे जीते रहने की प्रेरणा देता है, वह उनका ताल ठोककर विरोध करता है और आशातीत आत्मविश्वास एवं दृढ़ता से प्राणी–प्राणी में शांति एवं सद्भाव की स्थापना करता है। सच्चा

पत्रकार निर्माण की लपटों से समाज की बुराईयों को समाप्त करने का आयोजन करता है। पत्रकार ऐसे समाज का विधिवत् विकास करता है। जिससे आत्म साक्षात्मकार के इच्छुक लोगों को अपनी पहचान करने की पुष्टि मिलती है। इसलिए पत्रकारिता केवल निषेधात्मक ही नहीं होती, अपितु वह निर्मात्री भी होती है और समाज रचना के कार्यों में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है।

पत्रकारिता मनुष्य को उसके परिवेश से जोड़ती हुई अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र से भी जोड़ देती है। जो उसके चारों तरफ हो रहे घटनाक्रमों से परिचित कराती है। विज्ञान की उन्नति के साथ–साथ मनुष्य व्यस्तता की ओर अग्रसर होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में मनुष्य अपने आस–पास के मामलों की ही सुध नहीं रख पाता, तब सारे विश्व की तो बात ही क्या है परन्तु पत्रकारिता के माध्यम से न केवल हम अपने परिवेश से परिचित होते हैं। वरन् दूर–दराज के देशों से भी हमारा साक्षात्मकार कुछ ही क्षणों में हो जाता है। यही क्यों, कही कुछ घटित हुआ नहीं कि उसकी खबर हम न केवल पढ़ ही पाते हैं अपितु टेलीविजन जैसे वैज्ञानिक उपकरण के द्वारा उस घटना का आँखों देखा चित्र भी देख लेते हैं। जन संपर्क के माध्यम–रेडियों, टेलीविजन, टेलीप्रिन्टर, टेलेक्स, वायरलैस और समाचार–पत्र आज ऐसे माध्यम हैं जो संपूर्ण विश्व को एक चक्र में बांध देते हैं और मनुष्य की जिज्ञासा को जाग्रत करते हैं। मनुष्य केवल सामाजिक ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय प्राणी बन जाता है और समूचे विश्व के घटनाचक्र में एक इकाई के रूप में जुड़ जाता है जो उसे संकीर्ण दायरे से निकालकर अंतरिक्ष की ऊचाईयों को छूने में समर्थ बनाती है।

6. सम्प्रेषण का माध्यम – पत्रकारिता सम्प्रेषण का सामाजिक माध्यम है। आज का युग विज्ञान का युग है। इस विज्ञान ने हमें रेडियों, टेलीविजन, फिल्म, समाचार–पत्र आदि ऐसे माध्यम दिये हैं जिनके द्वारा समाज के किसी भी क्षेत्र में घटित घटनाएँ हमें तुरंत पलक झपकते ही मालूम हो जाती हैं और उस घटना को सुनते ही या देखते ही अगर हमें किसी हानि की संभावना नजर आती है तो हम तुरन्त उससे बवने का उपाय कर लेते हैं। पत्रकारिता जनता को सचेत करती है साथ ही उसे शिक्षित करती हुई उसे सुरुचिपूर्ण मनोरंजन भी प्रदान करती है। यही वह साधन है जो हम विश्व में होने वाले संपूर्ण नवीनतम आविश्कारों, घटनाओं और अनुसंधानों से परिचित कराकर प्रभावित करता है। विश्वपटल पर जो विभिन्न उत्सव आयोजन और घटनाचक्र दौड़ते हैं, उन्हें एक कुशल पत्रकार 'फीचर' शैली के माध्यम से अभिव्यक्ति देता है। घटनाओं के अतिरिक्त समाचार पत्रों में फीचर और साक्षात्मकार जैसे सम्प्रेषण के माध्यमों द्वारा ज्ञानवर्द्धन व चिन्तनधारा को प्रभावित करने वाले लेख भी समय–समय पर जन जीवन को आलोकित करते रहते हैं।

7. महान लक्ष्य – पत्रकारिता का लक्ष्य महान है। जन सामान्य की भावनाओं को अभिव्यक्ति देती है और साथ ही मनोरंजन का कार्य भी करती है। समाज का कोई भी पहलू या राष्ट्र की कोई भी चिन्तन पत्रकारिता के माध्यम से ही अभिव्यक्ति पाती है। जैसे जन–सामान्य में फैले हुए छुआछूत, अंधविश्वास, रुढ़िगत विचार आदि पर समय–समय पर टिप्पणियों व लेख विशेष प्रकाशित कर, जनमानस को अपने अनुकूल विचारों में ढाल लेती है। यही नहीं, पत्रकारिता जनता के विचारों को सबके सम्मुख रखती है। जिस रोज का जो विषय होता है, उस पर जन सामान्य की क्या प्रतिक्रिया हुई, उसे पत्रकारिता ही व्यक्ति करती है। मनोरंजन मानव जीवन की न केवल बहुत बड़ी आवश्यकता है वरन् अपरिहार्यता भी है। आज जब मनुष्य आकाश को नाप रहा है, धरती के गर्भ में जा रहा है, नक्षत्रों के रहस्य से अवगत होने की प्रक्रिया से गुजर रहा है, धरती और आकाश के मध्य निर्मित वायुमण्डल के हर साँस तक इतिहास लिख रहा हैं, तब इस समस्त घटनाचक्र से या इसमें हो रही आपा–धापी से मनुष्य थकने लगता है तो उसे मनोरंजन की अति आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में पत्रकारिता ही उसे ऐसे क्षेत्र में ले जाती है जहाँ उसका मस्तिष्क राहत महसूस करता है। उसमें छपने वाली सामग्री व्यंग्यपूर्ण, उत्तेजक, हल्कापन महसूस कराती है। यह अनुभूति व्यक्ति को न केवल राहत पहुँचाती है वरन् मनोरंजन के लक्ष्य को पूर्ण करती हुई जन सामान्य की अभिव्यक्ति का माध्यम भी बन जाती है।

8. कुशल चिकित्सक – पत्रकारिता एक कुशल चिकित्सक की भाँति सामयिक परिस्थितियों और घटनाचक्र की नाड़ी की जाँच कर उसके स्वास्थ्य को सुधारने का कार्य करती है। पत्रकार के पास एक तीखी व तेज नजर साथ–साथ भगवान शिव जैसी तीसरी आँख भी होती है। यही कारण है कि पत्रकार परिवेश के शरीर में दौड़ते हुए रक्त अथवा उसके रक्तचाप की परीक्षा करता है, उसकी धड़कनों का हिसाब रखता है। जब वह अधिक विकृत होने लगता है तब पत्रकार कुशलतापूर्वक सामाजिक परिवेष की एक्सरे रिपोर्ट भी प्रस्तुत कर देता है। यह काम वह फोटो–पत्रकारिता के माध्यम से करता है क्योंकि फोटो–पत्रकारिता घटना की सत्यता को प्रभावित करने के साथ–साथ एक चश्मदीद गवाह का भी काम करती है। यही नहीं, कई बार तो किन–किन परिस्थितियों के कारण यह घटना घटित हुई यह भी उसके चित्र से मिल जाता है। ऐसा करने से प्रत्येक घटना, प्रत्येक स्थिति, स्पन्दन–कम्पन और विकृतियाँ भी सामने आ जाती है।

9. सुदृढ़ कड़ी – पत्रकारिता शासन और समाज के बीज सम्बन्धों की एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करती है। जीवन के विविधि क्षेत्रों की जानकारी देने वाली पत्रकारिता लोगों को राष्ट्र से और राष्ट्र को लोगों को जोड़ती है। सरकार की मान्यताएँ, नीतियाँ समय–समय पर की गयी घोषणाएँ आदि समाचार–पत्रों में प्रकाशित होती हैं जिनके द्वारा जन–जीवन को यह पता चलता है कि शासन–तंत्र किन नीतियों का अनुसरण कर रहा है। समाचार–पत्र इन नीतियों के प्रति जन–सामान्य में व्याप्त प्रतिक्रियाओं को प्रतिबिम्बित करते हैं और यह निर्धारण करने में सहायक होते हैं कि लागू की नयी नीतियाँ सही है अथवा त्रृटिपूर्ण। पत्रों में प्रकाशित प्रतिक्रिया के आधार पर शासनतंत्र नीतियों में संशोधन आदि करता है अन्यथा स्वयं शासनतंत्र में ही अमूल परिवर्तन कर देता है।

10. जीवन का आधार – पत्रकारिता वर्तमान जीवन का आधार है। सभी वर्ग के लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति, व्यक्तित्व निर्माण और भविष्य निर्माण के रूप में पत्रकारिता का अत्यधिक महत्व है। वर्तमान मानव आज अपनी व्यस्तता के कारण यही चाहता है कि समस्त संसार में घटने वाली घटनाओं का लेखा–जोखा उसे कम से कम समय में मालूम हो जाए। रोजमर्रा के जीवन में काम आने वाली वस्तुओं को लेखा–जोखा तो पत्रों में होता ही है, साथ ही साहित्य, विज्ञान, खेलकूद, फिल्म आदि से सम्बद्ध पृष्ठ भी इसमें होते हैं। अर्थात जीवन का प्रत्येक क्षेत्र समाचार–पत्रों से प्रभावित होता है, क्योंकि समाचार–पत्र में प्रकाशित घटनाएँ हमारे आप–पास के जीवन संदर्भों से जुड़ी हुई होती हैं जो मानव के वर्तमान जीवन का आधार बनती है।

पत्रकारिता विधात्मक है। सभी वर्ग के लोग समाचार–पत्र के माध्यम से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते हैं। नौकरी पाने के इच्छुक, खेलकूद की चाहत रखने वाले उपभोक्ता, व्यापार से सम्बन्धित व्यापारी वर्ग, धर्म–सभा, सत्संग, भजन–कीर्जन में रुचि रखने वाले अपनी समस्याओं का समाधान करते हैं। इस तरह समाचार–पत्र मनुष्य के विचारों, मूल्यों और आदर्शों के निर्माण में

महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। समाज का प्रत्येक वर्ग चाहे वह गरीब हो या अमीर, मजदूर हो या पूँजीपति, कृषक हो या जमींदार, छात्र हो या अध्यापक, शासक हो शासित, नेता हो या अभिनेता, सभी के विचारों, उसकी गतिविधियों को जन–सामान्य तक पहुँचाने में समाचार–पत्र सहायक होते हैं। समाचार–पत्र वर्ग चेतना का प्रतीक है और वर्तमान जीवन का अभिन्न अंग भी। सभी वर्ग के लोग इससे अपने चिन्तन का निर्माण करते हुए, अपनी जिज्ञासा को शांत करते हुए भविष्य का निर्माण करते हैं। पत्रकारिता के स्वरुप और उसकी अपिरहार्य स्थिति को देखते हुए यह भी कहा जा सकता है कि यह एक कला तो है ही, साथ ही वैज्ञानिक और कलात्मक बोध को जगाने वाला सशक्त माध्यम भी है।

11. प्रेरणादायी व जागरूक – पत्रकारिता किसी भी राष्ट्र या देष की प्रेरणादायिनी हो सकती है। पत्रकारिता सामाजिक जागरूकता की जगमगाती किरण है। समाचार–पत्रों में केवल समाचार ही प्रकाशित नहीं होते वरन् मत या निर्णय भी प्रकाशित होते हैं। समाचार–पत्रों में सम्पादकीय टिप्पणियाँ बड़ी महत्वपूर्ण होती हैं, जिसमें सम्पादक आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक स्थितियों पर मुक्त मस्तिष्क से अपना विचार व्यक्त कर सकता है। अतः समाचार–पत्र राष्ट्र को प्रेरणा भी देते हैं और उसका दिशा निर्देश भी करते हैं। भारत में 'स्वतंत्रता आन्दोलन' को पत्रकारिता के द्वारा ही शक्ति मिली। पत्रकारिता ने ही देशवासियों के सुप्त स्वाभिमान को जागृत किया तथा उन्हें यह प्रेरणा दी कि स्वतंत्रता, राष्ट्रीयता और एकता जैसे जीवन मूलय ही मनुष्य के अस्तित्व को सुरक्षित रख सकते हैं। राष्ट्रीय भावना व जनमत को बनाने का महान कार्य समाचार–पत्रों द्वारा ही संभव हो सकता है।

12. मानवीय गुणों के विकास में सहायक – पत्रकारिता मानवीय गुणों को विकसित करती हुई उसे उसके अन्तर्दृष्टि पर पड़े आवरण को चीरकर ज्ञानलोक में ले जाती है। एक पत्रकार जो कुछ भी कहता है वह निर्भिक व स्पष्ट कथन होता है। मानव नित्य समाचार पत्र पढ़ता है, अपने सहज स्वभाव के कारण ही किसी खबर को पढ़कर वह आन्दोलित हो उठता है, जिसमें निर्भिकता, साहस के साथ स्वतंत्र निर्णय की क्षमता का विकास होता है और मनुष्य समाज व देष की स्थिति का अवलोकन करता हुआ अपनी अन्तर्दृश्टि को सही दिशा में ले जा सकता है। परिणामतः वह स्वयं ही अपने लिए उपयुक्त दिशा–पथ चुन सकता है।

पत्रकारिता एक उद्योग से ज्यादा जनसेवा है जिसका मुख्य लक्ष्य समाचारों को एकत्रित करना, उन्हें प्रकाशित और प्रसारित करना है। पत्रकारिता जीवन की विविधात्मक, तथ्यात्मक और यथार्थपरक स्थितियों को जनसामान्य तक प्रेषित करने का सशक्त माध्यम है। वर्तमान जीवन में जहाँ एक ओर वैज्ञानिक उपकरणों के आविष्कार से जीवनव्यापी दूरियाँ समाप्त हो रही है और मनुष्य राष्ट्रीय, अन्तराष्ट्रीय गतिविधियों से अवगत होने के लिए जिज्ञासू रहता है, वहाँ पत्रकारिता आवश्यक आवश्यकता बन गयी है। पत्रकारिता प्रत्यक्ष जीवन से जुड़ी हुई ऐसी शक्ति है जो सामाजिक विकृतियों को दूर करके जन–साधारण में मंगलकारी सुधारों और निर्माणकारी तत्वों व मूल्यों की प्रतिष्ठा करता है। जे0वी0 मैकी के अनुसार 'एक सच्चा पत्रकार अनुभव करता है कि वह अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम हित कैसे कर सकता है।' पत्रकार समाज का ज्ञान बढ़ाने, मार्गदर्शन करने और युग की सामयिक समस्याओं को उभारने के साथ–साथ, समाज का आँख, कान और मुख होता है। वह घटनाओं का अवलोकन करके गतिविधियों का 'श्रवण' करता है और अपनी लेखनी के माध्यम से उसमें रस प्रदान करता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. मानवाधिकार विश्वकोष (मीडियॉ व मानवाधिकार) डॉ0 कृष्ण कुमार शर्मा
2. वैज्ञानिक परिभाषा कोष– डॉ0 बद्रीनाथ कपूर
3. मानवाधिकार व अन्तराष्ट्रीय विधि– डॉ0 एस0के0 कपूर
4. भारत में मानवाधिकार की अवधारणा– सुधारानी श्रीवास्तव
5. भारतीय समाज व मानवाधिकार– अनिता कोठारी
6. भारतीय संविधान– दुर्गा दास बसु
7. मानवाधिकार– डॉ0 कमलेश कुमार सिंह
8. भारत में मानवाधिकार दशा व दिशा– डॉ0 इफ्तिखार हसन
9. मानवाधिकार– डॉ0 एस0के0 कपूर